



आमक्तितागिदवर्गं सरुदद्यागलध्वने। मनुलोलाकयानेष्टसकि
गयनिवात्रक॥ निवाद्यामाहं उरुं अद्यमउयदिरुकी॥ नियमं च
कनिदामि यवमध्वनवाक्या॥ ७॥ त्रयूत्रयश्चर्ययतनयत्रमध्वना
यवाकितजगत्तमयाकमदातनूनाधिकी ततः सर्वसंयुक्ततायी यः
विरुक्तं ननु बीक्यामि ॥ ॥ केलासवी ० मध्वर्क का नपमनन्दवि
यहात॥ वदुय्या ० समायुकी यागिनी सिद्धि संयुत ॥ आमक्तिता नि को
लीर्ण कोली संसरु रं गृह्णुदवदवणी गन्धधूर्यं यदिरुकी

॥ वदुक्तं देव समायुकी मूयक्तं समं विनी नवधा उरु सिद्धाष्टं गुह्य
हाय समन्ततः ॥ आमक्तिता मयारुक्ता गन्धयागय विरुक्त विद्यायीति
समस्कीली तथैवैववनी गण ॥ आमक्तिता मया सर्वो यदिरुक्तं दावनाग
वात ॥ यवधवमक्तनद्धय ॥ दवयति नद्धय ॥ ॥ आत्माधिवासन ॥
मक्त ॥ नद्धय ॥ आनन्दगकि रेनवानन्दवा नाधिकय मूणी पादुकी ॥ नः
वाक्यवनी ॥ ॥ वा ० गणद्वनी ॥ त्रिपुत्रया ॥ कालि ॥ यागमयती ॥
क्षानता ॥ ॥ ॥ आत्माधिवासन ॥ काषाय ॥ वलि ॥ द्विया ॥ मूलमः

कुशका॥ आवाक्यानिमूदा॥ धूप दीप जाय शांत॥ नित्य कर्म या
शका॥ तत्त्वसाधन॥ आचमन॥ धृत अधिवासन॥ ॥ ॥ ॥
तनायविद्यायाहनयून॥ ॥ गुननमस्त्रावादि॥ न्यास॥ जलया
गु अर्घ्याग आत्मयुजा॥ ॥ जलयागयार्तनि कृसीक अर्घ्याग॥
यववलि॥ धृतयावकिनीकृय॥ ॥ विदवा॥ उं २०८ यन्त्रिजमन्त्र
दो दो दू दोंगया लाथयादूका॥ वलि॥ आवाक्यानिमूदा॥ ॥
उं २०८ यन्त्रिजमन्त्र॥ वां वी वूं वदूकाथयादूका॥ वलि॥ आवाक्यादछ

मूदा॥ ॥ उं २०८ यन्त्रिजमन्त्र॥ गं गी गूं गणयतथयादूका॥ वलि॥
॥ आवाक्यागजमूदा॥ ॥ तनाकलसधू॥ उं १०८ यन्त्रिजमन्त्र दू
शीसम्युणकलसाथयविग कयादूका॥ वलि॥ आवाक्याधनूदा॥ ॥
॥ कृष्ण्या॥ उं १०८ यन्त्रिजमन्त्र॥ नं नूं ॥ शीकलकृष्णहाविकय
विग कयादूका॥ वलि॥ आवाक्या धू निमूदा॥ ॥ महावाग॥ ॥
उं ३८ यन्त्रिजमन्त्र ॥ शीमहावाग धू रुहाविकाथयादूका॥ आ
वाक्यानिमूदा॥ ॥ ॥ तनायष्टिमया॥ ॥ उं १०८ यन्त्रि

धनं न वलि ॥ ॥ ॐ १०८ यन्त्रि १ मन्त्र ॥ नैव दक्ष कृदि नैव कुं जे ला का
कर्मणी को कामांग दावनी को मी मरु दार का त्रिणी नै सो स घी याः
दू को ॥ नै जन मारु गवति कुं कृदि काये को को कुं धा न अ धा न मरु खी
कुं कुं कि लि श वि च य दू को ॥ नै जन मारु गवति कुं कृदि काये कुं
कुं कुं कृदि कुं ॥ ॐ न ज म अ धा न मरु खी कुं कुं कि लि श वि च य दू
को ॥ नै जन मारु गवति सिद्ध कुं कुं कुं र व उ ग नै धा न अ धा न अ धा
न मरु खी कि लि श वि च य दू को ॥ ॥ नै जन मारु गवति दक्ष मला

ये को णी द द या य न म ॥ नै कुं कृदि काये कुल दी या ये को नि न म र्वाः
॥ ॥ नै को को कुं व व ल गि र वा ये वा य दू ॥ नै धा न अ धा न अ धा न मरु खी
व दू नू या ये को णी क व वा ये कुं ॥ नै ज कुं कुं म र्द ता त्रि का ये को णी न
न ग या य वा य दू ॥ नै ज कि लि श वि च य दू कुं कुं कुं ॥ अ स्ता य रु द ॥
नै ज मी आ न च न कि रु न वा न च धा म र्वा वि धा न अ धा न अ धा न मरु खी
ग क कुं न उ ली कु या नि ॥ व लि ध न ॥ ध न मूल द वा या ॥ ॥ ॐ १०८
१०८ यन्त्रि १ मन्त्र ॥ नै ज म म म म य णि सि द्धा स न य णि य णि य णि य णि

सिद्धिददिसर्वसंग्रहतात्रिनीद्वीकाठकामनूयनिवाणिनीगः
गानवसिनीयियसमनसश्रद्धतविद्यतनीरुद्वीद्वीवृथाकिवि
शक्तिविनिश्च



दाव ॐ वसुधाय नमः ॥ धूम
 नुनयूजाया दावा ॥ पूर्वोदिम्
 द्वादिगम् ॥ ॐ कामाय नमः
 ॥ ॐ रुसर्गनीनाय ॥ ॐ अन
 न्नाय नमः ॥ ॐ मत्तथाय नमः ॥
 ॐ वसुधाय नमः ॥ ॐ
 समानाय नमः ॥ ॐ
 न्नाय नमः ॥ ॐ यथावा
 नमः ॥ ध्याय ॐ यूजाय ॥
 जगत्स्वप्न्याय विद्महे काम
 दवाय धीमहि ॥ तन्नास्तन्य
 आदयात् ॥ ध्याय ॐ यूजीरु
 को जयया दाव ॥ ॐ नमः
 मुपयवा ॥ य जगदातद्
 कात्रिणा ॥ सत्तथाय जगत्त्रेण
 नतिथीति यियाय ॥ ॥ ध्व
 नति नमस्का नयाय ॥ ॥ ध्व
 नति धवनत्ता हाति नडा दाव
 ॐ आसक्तिगामिदवागिस्सु
 ॥ कालमया निव ॥ ॥ ध्व

यथा ता ॐ यूर्ध्वं पूर्ववदा ॥
 या ॥ ध्वतः ॐ सदा वसुधाय
 नाया दम्भाका वदय ॥ क
 त्या सदा या कथन सदा ॥ ॐ
 वनल सदिग्ं मूलदवगा यूजा
 दाव ॥ ॐ समस्त वक्त्राणि
 सर्वयथाय ॥ दिशः सद्धान
 यूनयमदा वि कामान् कामध्व
 नध्वनि ॥ ॥ ध्वतः हाथ आलया
 वयार्थनायाय ॥ ॥ ॐ नमः ॥ क
 वचाय ॐ ध्वनध्वन नमः ॥ रु
 धूनया दाव ॥ ध्वनन तसाव
 नमूलदवी यूजायाय ॥
 मूलमकुयालयाव यनदवता
 दमननयूजाय मिध्वकाय न
 सकलरिने ध्वनति तेव ॥ ध्व
 ग्वल च्छुय ॥ कामयाव योध
 नाया दध्वनननयूजायाय ॥
 धनति साधक तसं कि त डाले
 कीर्णान्नमाना ॥ ॥ ध्वतध्व
 नकु ॥

ॐ नमः श्रीयवदवताये ॥ १ ॥
 दमनागरुनययागः ॥ वेप्रवेज्ञा
 रवञ्ज ॥ धर्तलासर्गव ॥ अष्टमीव
 दुर्दशीयर्षमासीकूर्द्धीतव ॥ हृष्ट
 नागिसधवतयासंवदाव ॥ ला
 दातसिध ॥ कृष्णमल्लखकाः
 यस्वस्तिवाचतयलथ ॥ ॐ ॥ अ
 त्यादि ॥ धर्क ॥ र्वादमतानाहत
 कर्माद्गृह्णाधिवारसकर्मकनि
 धा ॥ धर्तसैकल्ययादाव ॥ निवा
 यसादसैरुत ॥ अ ॥ सन्निहिता
 रुव ॥ निवाकायात्समृद्धिदत्त
 तयासिनिवारुया ॥ धर्तआमण
 लयादतति ॥ नतिथि ॥ त्रिहिका
 मधवधवनय ॥ अ ॥ प्रववाद्
 सवन ॥ धर्तआधिवारसन् ॥ ॥
 धवनरुक्कु ॥ यात ॥ क ॥ य ॥ आदि
 तिर्यकर्मधूनकाव ॥ धमधवया
 तिकटसवदाव ॥ सो ॥ नमः ॥ अः
 म्नुयरुट् ॥ धमकुत ॥ धवताहा

नसहितमा ॥ याव ॥ नेतमः ॥ द
 दयायन ॥ धमकुत ॥ वन्दनक
 कूमकयूनक ॥ कूनधर्त ॥ ॐ ॥
 समनलेयलयाव ॥ थलाङ्कगुलि
 सगयाव ॥ ॐ ॥ अ ॥ य ॥ य ॥ मा ॥ सि
 मीननासिगर्त ॥ पुद्गादकीचयुद्
 धाकि ॥ थो ॥ रानतवर्ध ॥ इ ॥ मूकाह
 दमतात्रा ॥ हणमर्दय ॥ निध ॥ थ
 तसैकल्ययादतति ॥ ॐ ॥ सिन्द
 नततवकोलवायाव ॥ धक
 लेण ॥ गु ॥ वर्ण ॥ त ॥ व ॥ कु ॥ य ॥ त ॥ व
 त ॥ द्वा ॥ यो ॥ अ ॥ व ॥ स्त ॥ य ॥ ल ॥ य ॥ ॥ ॐ ॥ अ
 जिपुः ॥ ॐ ॥ अ ॥ त्वा ॥ वि ॥ ण ॥ वि
 त्त्ववः ॥ ॐ ॥ अ ॥ नि ॥ व ॥ र्ध ॥ ॥ स्व ॥ सा
 न ॥ ॐ ॥ अ ॥ ध ॥ अ ॥ नू ॥ ध ॥ ना ॥ य ॥ य ॥ अ
 ही ॥ य ॥ न ॥ मा ॥ वि ॥ ण ॥ ता ॥ दु ॥ यि ॥ ॥ ॥
 धमकुत ॥ स्त ॥ य ॥ त ॥ मा ॥ य ॥ ॥ ॐ ॥ अ
 लस्याह ॥ रु ॥ न ॥ म ॥ सि ॥ व ॥ नू ॥ ण ॥ सा ॥ स्त
 सु ॥ स ॥ अ ॥ नी ॥ स्त ॥ ॥ व ॥ नू ॥ ण ॥ सा ॥ अ ॥ रा ॥ स

वती काली तापि लीत धमा ॥ यम
 दध्मिनि वाहुती दयाना यनम
 ध्वनी ॥ वल्लिने वसे गृध्रक मयारु
 ह्यनिश्चाजिता ॥ खारु ॥ आवाः
 रुनादियानि मूढा ॥ जाय १० ॥ स्त्री
 र्दु १० ॥ स्त्री ॥ यकयुता धिदूता ॥
 धर्तकल्ले गयूजा ॥ कामर्थ यदि
 मादिन मजाता ॥ यूजा या रुह ॥
 मूलता ॥ मूलनल्लि विगषयूजा
 ॥ यदुगि वासना ययादुकी ॥ धम
 ना ॥ यदुगि युक्ता मरु काली ॥
 दणव ॥ गिलोचना ॥ दध्व
 र्धे मरुता गजा ॥ अद्ववाकूत मूर्दे
 नी ॥ नानाव ॥ खीदवी सुये
 रावात्सिका समनत ॥ व्याख्यवः
 यनी धमनी ॥ रुशरुन गह्वरि
 ता ॥ गिष्टुली कृगवजाये ३ म
 इनायध्वददि ॥ यद्वार्दः
 पानयाये ३ मृतवानकर्नत
 धाविवननि कामनाजी सरु

मन्त्रिसे निरु ॥ अष्टानि कस्यम

गत्वाधिष्ठातृव्युक्तविष्णुः
नृदान्तमनविद्यागिवतत्वायः
द्वीग्रीसंपूर्णकलेणम
द्वीग्रीरुनेमरात्रावजः
द्वीग्रीरु॥वलि॥णीनमरा
क्रसेकन॥लश्रीनमरा॥सिध
मूळ॥आवाक॥धनसूदा॥जा
य०॥स्फाण॥॥वृक्षादिमूर्ति
सन्नभाकपाले रुवाष्टितारु
युगयकुतश्चात्रमवर्जरेनः
वसादिदर्व॥मूर्त्युजयाद्वर्णः
नर्नयुपयश॥॥कृष्णपूजा
॥पद्मासनाथपादुका॥ध्यान
॥गितकानन्दसदिसा॥पुत्रव
कागि लोचन॥दशदाद्वदः
नूचिता॥नानायुधकभाद्यता
॥नकानृणभवाधवी स्मनः
सर्वसुखयुदा॥नर्वध्यात्वाम
कादवी०००॥कामार्थसिद्धय
त॥०००॥निध्यानयुष्ट्यन्नमरा॥

नदाक्षनी॥॥गंगुगणयतिना
थस्त्रैवैणकिंवन्त्रसामिदिताय
पादुका॥॥वैकुण्ठवटुकना
था॥दो॥दु॥ख॥नक्षत्रयाला
॥॥खु॥म॥का॥क॥म॥ल॥व॥लि॥नी॥न॥द॥
म॥ख॥का॥का॥दु॥का॥णी॥का॥क॥म॥
खी॥या॥यु॥॥खु॥व॥वी॥णी॥व॥लि॥म॥
खी॥या॥यु॥॥खु॥दु॥णी॥का॥ली॥
या॥यु॥॥खु॥गु॥णी॥ता॥पि॥नी॥॥
खु॥पु॥णी॥पा॥व॥की॥पा॥यु॥॥खु॥
खे॥णी॥य॥म॥ख्य॥टा॥पा॥यु॥॥खु॥
सो॥णी॥गि॥वा॥दु॥नी॥पा॥यु॥॥खु॥
दो॥णी॥द॥य॥क॥नी॥ज॥म्बा॥पा॥यु॥
॥॥खु॥॥
अ॥पा॥यु॥॥खु॥रे॥न॥वी॥धो॥न॥लः॥
श्री॥व॥त्र॥य॥द॥पा॥यु॥॥मू॥ले॥नः॥
प्रि॥या॥उ॥र॥ति॥३॥॥म॥उ॥र॥इ॥नः॥
संपू॥य॥॥व॥लि॥॥ड॥की॥णी॥दि॥वा
क॥नि॥द॥श॥मा॥ष्ट॥पा॥ता॥ले॥ने॥ले
वा॥गि॥ता॥॥का॥कि॥णी॥वा॥कि॥णी॥

सम्भक्तो न आचारु न ॥ शिष्यं व
३ ॥ यद्यपि मादिश कल युजा ॥
ततो कल स युजा ॥
नृज आधम न शकं यादूकारि
॥ यद्वा सनाथ यादूकारि ॥
धमन ॥ शिष्यं नृज बध्न न भन
जटा खलु मल्लित ॥ कया
लमालनीत्यत ॥ योगसनकः
नक्ति ॥ व्याख्य चर्म जनीधमः
नाना गन्धान सिद्धि र्गीः
चाक्र गूण च विद्याः
नदी दिग्गज न ॥ कया लीक
लुका सुख योग निद्रा क न द
या कृश मृत्यु जय दर्व मृत्यु
भाग विना सनी ॥ ०० ति धमनः
युष्य न मश ॥ ३३ स ८ मृत्यु जः
याथ र्म युष्य कल ग मृत्यु य न
मश ॥ ३३ वृक्ष कल ॥ विष्कः
व ॥ नृदाथ ॥ ०० वृक्ष नाथ
॥ सदा शिवाथ ॥ गीमथ ॥

यस्य नाथ ॥ निर्मम दाथ ॥
को वंश ॥ गणु वी ॥ गमः
दाव नृ ॥ युद्धा लाथ ॥ यु
गि यदादि निधि र्था ॥ मा
र्मादि मास र्था ॥ पत व ॥
सम्भक्त नाथ ॥ दानादि स
क साग न र्था ॥ न न्यादि ति
थि र्था ॥ अग्नि न्यादि अक्षा
विगति न दंश र्था ॥ विष्कः
सादि स क विगति था ग र्था ॥
॥ मृदु र्था ॥ अदि र्थादि
न व ग र्था ॥ मखादि नाः
सि र्था ॥ अख र्था ॥ अ
द्वि वि अश वि र्था ॥ ०० द
दि द ग ला क या न र्था ॥
अन नादि अक्ष कल नागः
र्था ॥ शि या अश लि ॥ ३ ॥ न
ज क्मी कल द म रु म न
सी क्मी मारु नाथ कलः
ती धर्म नृ द व नाथ कल

रुं नमः ॥ यन्मगुर्वनमः ॥
 युष्मद्वचवदशविधिः ॥
 दध्वकोक्तवायवायविद्यः ॥
 सन्निर्गवर्तवाथलः ॥
 नमस्तुतिपाठको नरान
 नर्द्धधूनको मालेशर्मा ॥
 दध्वकोक्तवायवायविद्यः
 मः ॥ ॥ दध्वनासिखलाय
 नथ मूलशको वाकि ॥
 वसथरुमूलवाकि ॥
 गलेकावथताचयति सग
 ललुलाखयार्त पूजाआप
 ज्ञादिमासनक्षेत्र ॥ सन्ध
 को वाक्काणी यी ॥ सन्धनि
 वासिनी ॥ ध्व ॥ ध्वपूजागर्ल
 रुमस्तुयः ॥ ॥ गलेवाक
 वपूयराजनयावको ॥
 दध्ववलिहवनावायाव
 ॥ पूजायाय ॥ मारुष्टुमद्यः ॥
 गुननमस्कावादि ज्ञात्तपु
 जा ॥ ज्ञात्तवाकमादि पिद

व ॥ यश्चिमादिन सकल
 मूलशकोक्तवायवाय ॥ रुज
 माननगियाश्चित्तिलकुयः
 को ॥ वाकसकाव ॥ धूपदीप
 जाय ॥ स्मरण ॥ निव्ययाशको ॥
 वलिर्दध्वविमर्जन ॥
 यजमाननावायाव न्यासयाः
 य ॥ लैखनकायाव लासखः
 सिक्कायाय ॥ वतन ॥ अस्तुमकु
 नगियाश्चित्ति ॥ कायाव त्वार्द
 यजमाकाय ॥ नृवर्द्धनादिमा
 नी ज्ञाति स्नानी वस्तुर्दले ॥ च
 न्दनादि ज्ञाणीद्योद यतिह
 ज्ञानधि ॥ पूर्णचन्द ॥ कायाः
 वत्वाकाव थमयन हृदयम
 कुन ॥ ॥ यून ॥ यूनरान
 ॥ सिद्धलायनध्व वसथमाल
 को ॥ मारुष्टुमद्यः गुननमस्का
 व ॥ न्यासादि जल ज्ञात्तपु
 गुद्धि ज्ञात्तपुजा ॥ मालिनी ज्ञा
 वारुन ॥ यववलि ॥ ॥

२८ गुह्यमाला विद्या
पञ्चम पत्रिका-महोदधिविद्या

ASHA ARCHIVES

3541